

आलस्य और अलबेलापन - 12

अव्यक्त बापदादा :- (19.09.1972)

➡ _ ➡ जैसे बाप के सामने सम्पूर्ण स्टेज वा भविष्य स्टेज सदा सामने रहती है, वैसे ही अनुभव हो रहा है? कि सोचते हो - 'पता नहीं क्या भविष्य होना है? वह स्पष्ट होता कहां है? एनाउन्स तो होता नहीं।' लेकिन जो महावीर पुरुषार्थी हैं उनकी बुद्धि में सदा अपने प्रति स्पष्ट रहता है। तो स्पष्ट देखने में आता है वा थोड़ा-बहुत घूँघट बीच में है? आजकल ट्रान्सपेरेन्ट घूँघट भी होता है। दिखाई सभी कुछ देता है फिर भी घूँघट होता है। लेकिन वैसे स्पष्ट देखना और घूँघट बीच देखना-फर्क तो होगा ना? तो अपने पुरुषार्थ प्रमाण ट्रान्सपेरेन्ट रूप में घूँघट तो नहीं रह गया है? बिल्कुल ही स्पष्ट है ना?

➡ _ ➡ तो मधुबन निवासी अटल हैं ना कि यह संकल्प भी है कि यह क्या होता है? क्यों, क्या का क्वेचन तो नहीं? जो भी पार्ट चलते हैं उन हरेक पार्ट में बहुत कुछ गुह्य रहस्य समाए हुए हैं, वह रहस्य क्या था? सुनाया था ना समय की सूचना देने लिये बीच-बीच में घंटी बजा कर जगाते हैं। इसलिए आपके जड़ चित्रों के आगे घंटी बजाते हैं। उठाते भी हैं घंटी बजा कर, फिर सुलाते भी हैं घंटी बजा कर। यह भी समय की सूचना - घंटियां बजती हैं। क्योंकि जैसे शास्त्रवादियों ने लम्बा-चौड़ा टाइम बता कर सभी को सुला दिया है। खूब अज्ञान नींद में सभी सो गये हैं क्योंकि समझते हैं अभी बहुत समय पड़ा है। तो यहां फिर जो दैवी परिवार की आत्माएं हैं उन्हीं को चलते-चलते माया कई प्रकार के रूप-रंग, रीति-रस्म के द्वारा अलबेला बना कर समय की पहचान से दूर, पुरुषार्थ के ढीलेपन में सुला देती है। जब कोई अलबेला होता है तो आराम से सोता है। जिम्मेवारी होने से अटेंशन रहता है कि हमको टाइम पर उठना है, यह करना है। अगर कोई प्रोग्राम में नहीं तो अलबेला ही सो जावेगा। तो यह भी अलबेलापन आ जाता है। जब कोई अलबेले हो ढीले पुरुषार्थ के नींद के नशे में मस्त हो जाते हैं तो क्या करना पड़ता है? उनको हिलाना पड़ता है, हलचल करनी पड़ती है कि उठ जाये।

➡ _ ➡ जैसी-जैसी नींद होती है वैसा किया जाता है। बहुत गहरी नींद होती है तो उसको हिलाना पड़ता है लेकिन कोई की हल्की नींद होती है तो थोड़ी हलचल करने से भी उठ जाता है। अभी हिलाया नहीं है, थोड़ी हलचल हुई है। दूसरी चीज को निमित्त रख उसको हिलाया जाता है। तो जागृति हो जाती है। यह भी ड्रामा में निमित्त बनी हुई जो आलस्य-अलबेलापन सूचना-स्वरूप मूर्तियां हैं, उन्हीं को थोड़ा हिलाया, हलचल की तो सभी जाग गये। क्योंकि हल्की नींद है ना जागे तो जरूर लेकिन जागने के साथ रेड़ी तो नहीं की? ऐसे होता है, कोई को अचानक जगाया जाता है तो वह घबरा जाता है- क्या हुआ? तो कोई यथार्थ रूप से जागते हैं, कोई कुछ घबराने बाद होश में आते हैं। लेकिन यह होना न चाहिए, जरा भी चेहरे पर रूपरेखा घबराने की न आनी चाहिए। आवाज में भी चेंज न हो। आवाज में भी अगर अन्तर आ जाता है वा चेहरे में भी कुछ चेंज आ जाती है तो इसको भी पास कहेंगे? यह तो कुछ नहीं हुआ।

➡ _ ➡ अभी बहुत कड़े पेपर तो आने वाले हैं। पेपर को बहुत समय हो जाता है तो पढ़ाई में अलबेलापन हो जाता है। फिर जब इम्तिहान के दिन नजदीक होते हैं तो फिर अटेंशन देते हैं। तो यह अभी तो कुछ नहीं देखा। पहले पेपर कुछ लगभग हैं। लेकिन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जैसे हृद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए। घबराई हुई या युद्ध करती हुई

अवस्था ना हो। कोई घबराते भी नहीं हैं, युद्ध में लग जाते हैं। जरूर कुछ कल्याण होगा।

» _ » लेकिन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है। वह तब होगी जब एक ही बाप की याद में सदा मग्न होंगे। बाप और वर्सा बस, तीसरा ना कोई। और, कोई बात देखते-सुनते वा कोई संबंध सम्पर्क में आते हुए ऐसे समझेंगे जैसे साक्षी हो पार्ट बजा रहे हैं। बुद्धि उस लग्न में मग्न। बाप और वर्से की मस्ती रहे। इसलिए अब ऐसी स्टेज बनाओ, इसके लिए अपनी परख करने के लिए यह पेपर आते हैं। नहीं तो मालूम कैसे पड़े? हरेक की अपनी स्थिति को परखने के लिये थर्मामीटर मिलते हैं, जिससे अपनी स्थिति को स्वयं परख सको। कोई को कहने की दरकार नहीं, घबराना नहीं, गहराई में जाओ तो घबराहट बंद हो जावेगी। गहराई में न जाने कारण घबराते हो।

➤➤ सम्पूर्ण स्टेज या भविष्य स्टेज स्पष्ट होगा

» _ » चित्र हो एक साधारण और दूसरा डबल सिरताज

» _ » ऐसा वही बनेंगे जो

→ मीठा और जिनकी बुद्धि की लाइन क्लियर हो

→ जो महावीर हैं उनकी बुद्धि में स्पष्ट रहता है

■ जैसे ब्रह्मा को स्पष्ट था की जाकर प्रिन्स बनेगा

» _ » ट्रांसपेरेंट घूंघट बीच में ना हो

→ स्पष्ट देखना और घूंघट बीच देखना फर्क है

» _ » जो भी पार्ट चलते हैं उनमें गुह्य रहस्य समाया है

» _ » समय की सूचना देने जड़ चित्रों के आगे मंदिरों में घंटी बजाते

→ धार्मिक और वैज्ञानिक कारण

■ देवतायें जागृत हो जाएँ तो प्रार्थना फलदायी होगी

■ घंटी से वातावरण में प्रकंपन फैलते हैं

■ जिससे सूक्ष्म जीव और पाप समाप्त हो जाते हैं

■ अशांत मन शांत हो जाता है

■ सृष्टि में जो आवाज है वो टकराव से उत्पन्न होता है

■ अनहद नाद जो किसी टकराव से उत्पन्न नहीं होता

► बाबा कहते हैं तुम्हारे दिल से बस एक ही साज बजता रहे-बाबा, एक ही बाबा आँखों में समाया हुआ हो

► सृष्टि का आगाज इसी से हुआ और सृष्टि का अंत भी उसी आवाज से होगा

► वो आवाज सम्पूर्ण सृष्टि में निरंतर गुंजायमान है जिसे साकार में ॐ नाम दिया, जिसे ही परमात्मा कहा

► मंदिर में घंटी को भी ॐ का एक रूप, परमात्मा का स्वरूप ऐसी मान्यता है

■ सुलाते भी घंटी बजाकर, जगाते भी घंटी बजाकर

- शास्त्रवादियों ने लम्बा समय बताकर अज्ञान की नींद में सुला दिया है

- वैसे दैवी परिवार की आत्माओं को चलते-चलते माया अलबेला बना कर समय की पहचान से दूर, पुरुषार्थ के ढीलेपन में सुला देती है

» _ » जो अलबेला होता है तो आराम से सोता है

» _ » जिम्मेवारी होने से अटेंशन रहता है की टाइम पर उठना है

» _ » जब कोई ढीले पुरुषार्थ के अलबेलेपन में सोता है तो हिलाना पड़ता है

» _ » जैसी-जैसी नींद वैसा किया जाता है

- गहरी नींद हो तो हिलाना पड़ता है

- हल्की नींद हो थोड़ी हलचल से उठ जाता है

- दूसरी चीज को निमित्त रख उसको हिलाया जाता है तो जागृति हो जाती है

- जैसे फ्लड्स, प्राकृतिक आपदाएं, अतिवृष्टि

- पांचो ही तत्वों का आक्रमण

- बीच-बीच में रिहर्सल होता रहेगा

- कोई को अचानक जगाया जाता है तो घबरा जाता है

- चेहरे की रूपरेखा ना बदले और आवाज में भी चेंज ना हो

➤➤ बहुत कड़े पेपर्स आने हैं

» _ » जगाने के लिए पेपर्स आते हैं

» _ » पेपर को बहुत समय हो जाता है तो पढ़ाई में अलबेलापन हो जाता है

» _ » पेपर्स नहीं आने से समझते हैं हमने काम, क्रोध, विकारों को जीत लिया

» _ » अभी तो कुछ भी नहीं है, अभी दुखों के पहाड़ गिरने हैं

» _ » जो स्वप्न में और संकल्प में भी नहीं सोचा होगा

- दुनिया मेंटल हॉस्पिटल बन जाएगी, खून की नदियाँ बहेगी

- एक तरफ फ्लड, एक तरफ अकाल

- सारे साधन बंद होंगे

- बिजली बंद हो जाएगी, बिजली गिरेगी, उल्कापात

- चारों तरफ पानी होगा पर पीने के लिए नहीं होगा

- एक तरफ भूकंप में लोग फंसे होंगे, एक तरफ तूफान होगा

- प्रेत आत्माओं का वार होगा

- एक शरीर में 10-20 आत्माएं घुस जाएंगी

- न्यू क्लियर वार होगा

→ विकार, संस्कार जिसको जीता नहीं वो बाहर निकलेंगे

- जो बीज है तुरंत झाड़ का रूप ले लेगा

» _ » योग का अभ्यास

→ किसी भी चीज पर हमारी तपस्या आश्रित ना हो

- ना कोई स्थान
- ना कोई गीत, संगीत
- ना कोई ट्रांस लाइट

→ तुरंत अशरीरी हो जाना है

→ स्थिति हमारी शक्तिशाली हो

■ इस संसार का कोई भी व्यक्ति, परिस्थिति हमें हिला ना सके

- समाधान स्वरूप बनना है

→ बिना तपस्या के केवल सेवाओं में नहीं खो जाना है

➤➤ साक्षी दृष्टा की अवस्था

» _ » जो हो रहा है सब ड्रामा है, एकरस अवस्था

→ चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे स्नेही आत्मा का गंभीर पार्ट हो

→ दर्शक की स्थिति, Detached observer

→ घबराई हुई या युद्ध की अवस्था ना हो

» _ » एकरस अवस्था तब होगी

→ जब एक की याद में मगन होंगे

→ देह भी याद ना आये

- देह के साथ देह के सम्बन्ध, पदार्थ, दुनिया भी याद आ जायेंगे

► फिर तख्तनशीन से माया की फांसी के तख्ते पर होंगे

→ बाप और वरसे की मस्ती में रहे और कोई सम्बन्ध याद ना आये

» _ » पेपर आते हैं

→ परखने के लिए

- अब तक जो पुरुषार्थ किया उसका फाइनल रिजल्ट

► अमृतवेला, मुरली सब कर रहे पर परिस्थिति आने पर संकल्पों की भीड़

→ स्थिति को परखने का थर्मामीटर है

» _ » गहराई में जाने से घबराहट बंद हो जाएगी

→ जितनी गहराई में जायेंगे कोई घबराहट नहीं, ऊपर में हलचल

नै

